संचयन : भाग-2 (पूरक पाठ्यपुस्तक)

1

हरिहर काका

मिथिलेश्वर

पाठ का संक्षिप्त परिचय

यह पाठ एक कहानी के रूप में है । इसमें कथाकार मिथिलेश्वर ने 'हरिहर काका' कहानी के बहाने ग्रामीण पारिवारिक जीवन में ही नहीं हमारे आस्था के प्रतीक धर्मस्थानों और धर्मध्वजा धारकों में जो स्वार्थलोलुपता घर करती जा रही है उसे उजागर किया है । हरिहर काका एक वृद्ध और नि:संतान व्यक्ति हैं, वैसे उनका भरा-पूरा संयुक्त परिवार है । गाँव के लोग कुमार्ग पर न चलें यह सीख देने के लिए एक ठाकुरबाड़ी भी है, लेकिन हरिहर काका की विडंबना देखिए कि यही दोनों उनके लिए काल और विकराल बन जाते हैं । न तो परिवार को हरिहर काका की फिक्र है न मठाधीश को, दोनों उन्हें सुख नहीं दुख देने में, उनका हित नहीं अहित करने

में ही मगन रहते हैं । दोनों का लक्ष्य एक ही है, हरिहर काका की जमीन हथियाना । इसके लिए उन्हें चाहे हरिहर काका के साथ छल-बल-कल का प्रयोग भी क्यों न करना पड़े । पारिवारिक संबंधों में भ्रातृभाव को बेदखल कर पाँव पसारती जा रही स्वार्थ लिप्सा और धर्म की आड़ में फलने-फूलने का अवसर पा रही हिंसा वृत्ति को बेनकाब करती यह कहानी आज के ग्रामीण ही नहीं, शहरी जीवन का भी यथार्थ उजागर करती है ।

2

इस कहानी में लेखक मिथिलेश्वर ने हरिहर काका के जीवन की त्रासदी के माध्यम से आज के ग्रामीण और शहरी जीवन में समा रही स्वार्थपरता का क्रूर रूप दर्शाया है । लेखक हरिहर काका के जीवन से गहरे रूप से जुड़ा है । लेखक उनका काफी सम्मान करता है । लेखक की माँ ने बताया कि हरिहर काका उसे कंधे पर बिठाकर घुमाया करते थे । उन्होंने उसे प्यार-दुलार दिया था । अब वे जीवन की अंतिम स्थिति में थे । उन्होंने बोलना बंद कर दिया था । हरिहर काका की पिछली जिंदगी के बारे में जानना आवश्यक है । लेखक और हरिहर काका एक ही गाँव के रहने वाले हैं ।

लेखक का गाँव आरा शहर से 40 कि.मी. की दूरी पर है। यहाँ की आबादी ढाई-तीन हजार के आस-पास होगी। गाँव के पूरब में ठाकुर जी का विशाल मंदिर है। इसे ठाकुरबारी कहा जाता है। इसकी स्थापना के बारे में स्पष्ट रूप से पता नहीं है, पर अब यह मंदिर गाँव के अधिकांश लोगों की श्रद्धा का स्थल है। सभी अच्छे कामों के होने का श्रेय इसी को दिया जाता है। यह सारे इलाके में प्रसिद्ध है। ठाकुरबारी में भजन-कीर्तन की आवाज गूंजती रहती है। ठाकुरबारी के साथ काफी जमीन जुड़ी हुई है। पहले हरिहर काका नियमित रूप से जाया करते थे, पर अब उन्होंने वहाँ जाना बंद कर दिया है।

5

हरिहर काका चार भाई हैं । हरिहर काका की दो शादियाँ हुईं, पर उनसे कोई बच्चा नहीं हुआ और वे मर गईं । परिवार के पास कुल 60 बीघे जमीन है । हरिहर काका के हिस्से में 15 बीघे जमीन आती है । परिवार संयुक्त रूप से रहता है । वैसे तो भाइयों ने अपनी पत्नियों को कह रखा था कि हरिहर काका की अच्छी तरह सेवा करें, पर वे इस पर पालन नहीं करती थीं । हरिहर काका को बचा-खुचा भोजन खाने को मिलता था । जब कभी उनकी तबीयत खराब हो जाती तो उनको कोई पानी तक नहीं देता । ऐसे समय उन्हें अपनी पत्नी की याद आ जाती । एक दिन उनकी सहन शक्ति जवाब दे गई । हरिहर काका का एक भतीजा शहर में क्लर्की करता था ।

एक बार उसके साथ उसका दोस्त गाँव में आया । उसके लिए अत्यंत स्वादिष्ट भोजन तैयार किया गया । घर के सभी सदस्यों ने खा लिया,पर हरिहर काका को किसी ने नहीं पूछा । थक-हारकर वे स्वयं हवेली में अंदर गए तो उनके सामने रूखा-सूखा खाना रख दिया गया । हरिहर काका के तन-बदन में आग लग गई । उन्होंने खाने की थाली उठाकर बीच आँगन में फेंक दी और बहुओं को खूब खरी-खोटी सुनाई । जिस समय वे बोले जा रहे थे उस समय ठाकुरबारी के पुजारी वहीं दालान में मौजूद थे । उन्होंने ठाकुरबारी में पहुँचकर महंत को सारी घटना बता दी । महंत इस समाचार को अपने लिए शुभ मानकर ठाकुरबारी से चल पड़े । उन्हें रास्ते में हरिहर काका मिल

Extramarks

गए । महंत उन्हें समझा-बुझाकर ठाकुरबारी में ले आए । उन्होंने दुनिया के लोगों को स्वार्थी बताया और धर्म-कर्म में ध्यान लगाने का उपदेश दिया । महंत ने हरिहर काका के सामने यह प्रस्ताव रखा कि वे अपने हिस्से की पन्द्रह बीघा जमीन ठाकुर जी के नाम लिख दें । इससे तुम्हें बैकुंठ की प्राप्ति होगी तथा लोग तुम्हें सदा याद करते रहेंगे । हरिहर काका देर तक महंत की बातें सुनते रहे । वे दुविधा में थे कि क्या करें ? भाई का परिवार भी उन्हें अपना लगा । महंत ने हरिहर काका को अपने वश में करने के लिए उनके रहने और खाने की उत्तम व्यवस्था कर दी । शाम को हरिहर काका के भाइयों को सारी घटना की सूचना मिली । उन्हें अपनी पत्नियों पर गुस्सा आया ।

वे हरिहर काका को मनाने के लिए ठाकुरबारी जा पहुँचे। उस दिन तो वे उन्हें लाने में सफल न हो सके, पर अगले दिन जाकर हरिहर काका के पाँव पकड़कर रोने लगे। हरिहर काका का दिल पसीज उठा और वे उनके साथ घर लौट आए। अब घर पर उनकी खूब सेवा होने लगी। खाना भी स्वादिष्ट मिलने लगा। गाँव में हरिहर काका चर्चा का विषय बन गए थे। हरिहर काका के भाई भी उनसे निवेदन करने लगे कि वे अपनी जमीन उन्हें लिख दें। हरिहर काका के सामने ऐसे कई उदाहरण थे जिन्होंने जीते-जी जमीन रिश्तेदारों के नाम कर दी थी और बाद में बदहाली की यातना झेली थी। अतः हरिहर काका ने सीधा सा उत्तर दिया वे जमीन किसी के नाम नहीं लिखेंगे।

उनके मर जाने पर वह जमीन स्वतः ही उन्हें मिल जाएगी। उधर महंत भी जमीन को ठाकुर जी के नाम करने पर जोर दे रहे थे। महंत को चिड़िया जाल से बाहर जाती दिखाई दे रही थी। महंत ने एक योजना बनाकर अपने लोगों को भाला, गंडासा और बंदूक से लैस करके हरिहर काका का अपहरण करवा लिया। हरिहर काका के भाई जान गए कि यह काम महंत का ही है। वे पुलिस को लेकर ठाकुरबारी जा पहुँचे। ठाकुरबारी में महंत और उसके आदमियों ने सादे और लिखे कागजों पर जबर्दस्ती हरिहर काका के अँगूठे के निशान ले लिए। हरिहर काका महंत के इस रूप पर हैरान थे। ठाकुरबारी के बाहर पुलिस थी। पुलिस को वहाँ कोई हलचल दिखाई न दी।

Extramarks

तभी एक कमरे से धक्का मारने की आवाज सुनकर पुलिस ने ताला तोड़कर अंदर प्रवेश किया । वहाँ हरिहर काका रस्सी से बँधे मिले । उनके मुँह में कपड़ा ठुँसा हुआ था । उनको बंधन मुक्त करके उनके बयान लिए गए । उन्हें घर ले जाया गया । अब वे पुनः भाइयों के साथ रहने लगे । अब उनका बहुत ध्यान रखा जाने लगा । हरिहर काका पर महंत और भाइयों का दबाव था कि वे अपनी जमीन उनके नाम कर दें । भाई जब समझाकर हार गए तब उन्होंने भी महंत वाला रूप धारण कर लिया । उन्होंने कहा-"सीधे मन से कागजों पर जहाँ-जहाँ जरूरत है, अँगूठे के निशान बनाते चलो अन्यथा मारकर यहीं घर के अंदर गाड़ देंगे । गाँव के लोगों को सूचना तक नहीं मिल पाएगी ।

हरिहर काका ने गुस्सा दिखाते हुए जमीन लिखने से साफ इंकार कर दिया । अब भाइयों ने हाथापाई शुरू कर दी । हरिहर काका चिल्लाने लगे । भाइयों ने उनके मुँह में कपड़ा ठुँस दिया । यह खबर महंत जी तक चली गई । अब की बार वे पुलिस को लेकर आ धमके । पुलिस ने हरिहर काका को बदतर हालत में बरामद कर लिया । बंधन मुक्त होने पर हरिहर काका ने पुलिस को बताया कि उनके भाइयों ने जबरन अनेक कागजों पर उनके अगूंठे के निशान ले लिए हैं । उनकी पीठ, माथे और पाँव पर कई जगह जख्म थे । अब हरिहर काका पुलिस की सुरक्षा में रह रहे हैं । वैसे महंत और भाई भी अपने-अपने स्वार्थों के कारण उन्हें सुरक्षा प्रदान कर रहे हैं ।

Extramarks

12

गाँव के एक तथाकथित नेताजी ने जमीन पर एक हाईस्कूल खोलने का प्रस्ताव रखा- 'हरिहर उच्च विद्यालय', पर काका ने उन्हें भी निराश कर दिया। काका सारे गाँव में चर्चा का विषय बने हुए हैं। उनकी संभावित मौत पर भी लोगों के अपने-अपने विचार हैं। तरह-तरह की अफवाहें फैलती रहती हैं। महत को लेकर भी खबरें फैलती है कि हरिहर काका की मृत्यु के बाद देश के कोने-कोने से साधुओं और नागाओं को बुलाकर जमीन पर कब्जा कर लेंगे। पर हरिहर काका बिल्कुल मौन रहकर अपने जीवन का शेष भाग काट रहे हैं। उन्होंने एक नौकर रख लिया है। वही खाना बनाता एवं खिलाता है। अब वे गूँगेपन का शिकार हो गए हैं।

Extramarks
Extramarks
Extramarks

वे आकाश को निहारते रहते हैं । हाँ, उनके खर्चे पर पुलिस के जवान खूब मौज-मस्ती कर रहे हैं ।

13